Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: VA

DATE:_____ NAME:_____

<u>सामूहिक कविता पाठ</u>

"पाया मैंने बचपन"

बार-बार आती है
मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया, ले गया तू
जीवन की सबसे मस्त
खुशी मेरी ।

चिंतारहित खेलना-खाना,
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद
कैसे भूला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनंद!

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था,

छुआ-छूत किसने जानी ?

बनी हुई थी आह झोंपड़ी

और चीथड़ों में रानी ।।

किए दूध के कुल्ले मैंने,

चूस अँगूठा अमृत पिया।

किलकारी कल्लोल मचाकर

सूना घर आबाद किया ।।

मैं रोई,

माँ काम छोड़कर आई,

मुझको उठा लिया।

झाड़ू-पोंछकर

चूम-चूम गीले गालों

को सुखा दिया ।।

आ जा बचपन !

एक बार फिर दे दे

अपनी निर्मल शांति।

व्याकुल व्यथा मिटाने वाली

वह अपनी प्राकृत विश्रांति ।।

मैं बचपन को बुला रही थी,

बोल उठी बिटिया मेरी ।

नंदन-वन-सी फूल उठी

यह छोटी-सी कुटिया मेरी ।।

"माँ ओ" कहकर बुला रही थी,

मिट्टी खाकर आई थी। कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में

मुझे खिलाने लाई थी।।

पुलक रहे थे अंग, दृगों में

कौतूहल था छलक रहा।

मुँह में थी आह्लादलालिमा,

विजयगर्व था झलक रहा ।।

मैंने पूछा, "यह क्या लाई ?

" बोल उठी वह, "माँ, काओ।"

हुआ प्रफुल्लित हृदय हर्ष से

मैंने कहा, "तुम्हीं खाओ।।"

पाया मैंने बचपन फिर से,

बचपन बेटी बन आया।

उसकी मंजुल मूर्ति देखकर

मुझमें नवजीवन आया।।

-श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: V B

नाम : ----------

सामूहिक कविता पाठ

बादल → दयानन्द सिंह 'अटल

मत बरसो बादलो इस तरह,
बाज आओ शैतानी से।
जा न पाएंगे हम विद्यालय,
तुम सबकी मनमानी से ॥
तुम क्या जानो होती हैं
क्या-क्या मुसीबतें बच्चों की।
रख देते हालत बिगाड़ कर,
तुम तो अच्छे-अच्छों की ॥
हम बच्चों जैसे तुम जिद्दी,
तुम भी जब जिद करते हो ।
नहीं किसी की सुनते हो तुम,
नदी-ताल सब भरते हो ॥
आ जाती है बाढ़ भयंकर,
तेज बरसते पानी से।
मत बरसो बादलो इस तरह,
बाज आओ शैतानी से ॥
तुम हो सबल, निबल हम बच्चे,
कुछ तो सुनो हमारी भी।
छोड़ो जिद अब गुस्सा थूको,
तुम तो हो उपकारी भी ॥
तुम हो सबल, निबल हम बच्चे,
कुछ तो सुनो हमारी भी।
छोड़ो जिद अब गुस्सा थूको,
तुम तो हो उपकारी भी ॥
करते हो उपकार तो फिर क्यों,
तुम अपकार कमाते हो।
भारी वर्षा करके क्यों तुम,
गांव के गांव बहाते हो ॥
मान जाओ हम विनती करते,
भोली-भाली बानी से।
मत बरसो बादलो इस तरह,
बाज आओ शैतानी से ॥
सचमुच तुम सब बड़े ढीठ हो,
करते हो अपने मन की।
तुम गुरूर में फिकर न करते,
धरती के जन-जीवन की ॥
नील गगन को समझ बपौती,
अपना रोब जमाते हो।
गरज-गरज कर तुम सब हमको
आंखें खूब दिखाते हो ॥
तुम भी जियो, हमें भी जीने दो-
भैया आसानी से।
मत बरसो बादलो इस तरह,
बाज आओ शैतानी से ॥

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: VC

DATE:________________ NAME:_______________________

सामूहिक कविता पाठ

चेतक

चेत करो, अब चेत करो

चेतक की टाप सुनाई दी।

भागो-भागो, भाग चलो,

भाले की नोक दिखाई दी ।।

दौड़ाता अपना घोड़ा अरि

जो आगे बढ़ जाता था।

उछल मौत से पहले उसके

सिर पर वह चढ़ जाता था ।।

लड़ते-लड़ते रख देता था

टाप कूदकर गैरों पर

हो जाता था खड़ा कभी

अपने चंचल दो पैरों पर ।।

आगे-आगे बढ़ता था वह,
भूल न पीछे मुड़ता था।
बाज नहीं, खगराज नहीं,
पर आसमान में उड़ता था।।

लड़ता था वह वाजि लगाकर
बाज़ी अपने प्राणों की।
करता था परवाह नहीं वह
भाला-बरछी-बाणों की।।

फाड़-फाड़कर कुंभस्थल,
मदमस्त गजों को मर्दन कर।
दौड़ा, सिमटा, जमा, उड़ा,
पहुँचा दुश्मन की गर्दन पर।।
'चें' तक अरि ने बोल दिया
चेतक के भीषण वारों से।
कभी न डरता था दुश्मन

की लहू भरी तलवारों से ।।

उड़ा हवा के घोड़े पर,

हो तो चेतक -सा घोड़ा हो।

ले ले विजय, मौत से लड़

जिसका ऐसा घोड़ा हो।। -2

-श्यामनारायण पांडेय

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: V D

नाम : _____

~सामूहिक कविता पाठ~

खोटी अठन्नी

कवि - रामेश्वर दयाल दुबे

आओ तुम्हें सुनाएँ अपनी बात बहुत ही छोटी,
किस तरह आ गई हमारे पास अठन्नी खोटी।

रहा सोचता बड़ी देर तक, पर न याद कुछ आया,
किसने दी? कैसे यह आई ? अच्छा धोखा खाया।

जो हो अब तो चालाकी से होगा इसे चलाना,
किंतु सरल है नहीं आजकल मूरख-बुद्धू पाना।

साग और सब्ज़ी लेने में उसे खूब सरकाया,
कभी सिनेमा की खिड़की पर मैंने उसे चलाया।

कम निगाह वाले बुड्ढे से मैंने चाय खरीदी,
बेफ़िक्री से, मनोवेग से, वही अठन्नी दे दी।

किंतु कहूँ क्या, 'खोटी' कहकर सबने ही लौटाई,
बहुत चलाई, नहीं चली वह, लौट जेब में आई।

रोज़ नई तरकीब सोचता, कैसे उसे चलाऊँ,
एक दिवस जो बीती मुझ पर, वह भी तुम्हें सुनाऊँ।

एक भला-सा व्यक्ति एक दिन, निकट हमारे आया,

क्या रुपए के पैसे होंगे ? रुपया एक बढ़ाया।

मौका अच्छा देख पर्स को मैंने तुरंत निकाला,

वही अठन्नी दो चवन्नी, देकर संकट टाला।

मैं खुश था, चल गई अठन्नी, कैसा मूर्ख बनाया,

इसी खुशी में मैं तंबोली की दुकान पर आया।

रुपया फेंक कहा मस्ती में, "अच्छा पान बनाना।"

रुपया देख तंबोली विहँसा, उसने मारा ताना ।

खूब, खूब! खोटे सिक्के को क्या था यहीं चलाना,

मैं गरीब हूँ, किसी अन्य को जाकर मूर्ख बनाना।

मूर्ख बनाने चला स्वयं वह पहले मूर्ख बनेगा,

सच है जो डालेगा छींटे, कीचड़ बीच सनेगा।

घातक है प्रत्येक बुराई, हो कितनी ही छोटी,

सिखा गई है खरी बात वह, मुझे अठन्नी खोटी ।